# आभार

**''गुरुबिन ज्ञान न पावे, मन मुरख सोच-सोच काहे पछतावे''**

**"सद गुरुकी संगत करले रे अज्ञानी, सब गुनियन में गुनी कहावे"**

शोधार्थी स्वयं गायन का विद्यार्थी रहा है | शोधार्थी की संगीत शिक्षा में तथा सांगीतिक ज्ञान वर्धन में कई गुरुओं का आशीष रूप शिर पर हाथ रहा है, ऐसे मेरे सभी गुरुओं का नाम लेकर उन्हे नतमस्तक चरण वंदन करके याद करना चाहूँगा –

गायन क्षेत्र से : स्व.श्री लक्ष्मीकांत बापट, प्रो. ईश्वरचंद्र पंडित, प्रो. द्वारकानाथ भोंसले, डॉ. श्रीराम गद्रे, श्री बालकृष्ण भवरिया, श्री बिपिनभाई पटेल, स्व. श्री अनिल वैष्णव, स्व. पं. दयानंद देवगान्धर्व, स्व. शुभदा देसाई, स्व. लता प्रभुने, स्व. डॉ. श्रीकान्त चतुर्वेदी, स्व. श्री हिमांशु देसाई, स्व. श्री रमेशभाई व्यास |

वायोलिन विभाग से : स्व. प्रो. वसंत रानडे |

तबला विभाग से : स्व. प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना, स्व. श्री पुष्कर्राज श्रीधर |

मेरी संगीत की शिक्षा की यात्रा में उपरोक्त सभी गुरुजनों ने संगीत के प्रायोगिक क्रियात्मक तथा शास्त्रोक्त पक्ष के विषय को लेकर मेरा समय-समय पर ज्ञान वर्धन किया है | मैं इन सब गुरुजनों का सदैव ऋणी-आभारी रहूगा |

विद्यार्थी काल के सांगीतिक अभ्यास के दौरान से ही प्रस्तुत शोध-विषय, शोधार्थी के ध्यान में था | इस विषय को लेकर उपरोक्त सभी गुरुजनों से विचार-विमर्ष,चर्चा भी होती रही | हिन्दुस्तानी संगीत की वृहत, अपार राग सम्पदा को देखते हुए यह प्रतीत हुवा की संगीत अनंत महासागर की तरह है, कितने ही अप्रचलित अछोप राग सिर्फ ग्रंथों तक ही सिमित है | ग्रंथों में दिया हुआ राग वैभव यदि व्यवहार में गाने बजाने में नहीं आते तो धीरे-धीरे ऐसे राग लुप्त हो जाएँगे, नष्ट एवं समाप्त हो जायेंगे तथा कुछ राग ऐसे भी हैं की जिनका सर्जन समय-समय पर कुछ वाग्येकार, विद्वानों, पंडितों और गायकों-वादकों द्वारा होता रहा हैं | ऐसे अप्रचलित, अप्रकाशित तथा नवीन रागों को संगीत जिज्ञासु, संगीत के विद्यार्थीयों के समक्ष प्रचार-प्रसार करने हेतु, शोधार्थी के मन में विचार आने से इस शोध-प्रबंध के ऊपर एक नवीन कार्य करके

इन विशिष्ट रागों की सम्पदा को सुरक्षित रखने हेतु तथा प्रस्तुत विषय पर, इस प्रकार से किसी ने ज्यादा काम न किया हुवा देखकर शोधार्थी के मन में 'औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, की तरफ ध्यान केन्द्रित हुवा, तत्पश्चात् शोधार्थी ने शोध-कार्य हेतु इस विषय पर कार्य करना निश्चित किया, तथा आखिर में दिनांक ८/२/२०१७ को फ़ैकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स, दि महाराजा सयाजीराव यूनिवार्सिटी द्वारा स्वीकृति मिली और डॉ. अश्विनी सिंह जी जो गायन विभाग में हैं उनके निर्देशन में शोध-कार्य हेतु पंजीकृत किया गया, जिसका शीर्षक है - "उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के अप्रकाशित, अप्रचलित और नवनिर्मित औडव-औडव, औडव-षाडव तथा षाडव-षाडव जाति के रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" |

प्रस्तुत शोध-कार्य सफल बनाने में जिन-जिन व्यक्तियों ने मेरी सहायता की, मैं उन सबका हृदय पूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ | सर्वप्रथम मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ. अश्विनी सिंह जी का धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने मेरा शोध-कार्य पूर्ण करने में समय-समय पर मार्गदर्शन किया | मैं, विश्वविद्यालय के डीन डॉ. राजेश केलकर जी का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रशासनिक कार्य के सबंध में सदा मदत की| मैं श्री सुधीर गद्रे जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके माध्यम से कई रागों के अभ्यास में मदत मिली | मैं, पं. विकास कसालकर जी का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनसे प्रत्यक्ष मुलाक़ात दौरान वासी, मुंबई (२०/१०/२०१८) तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, औरंगाबाद, महाराष्ट्र (रिफ्रेशर कोर्स ६/३/२०१३ ते २६/३/२०१३) के दरम्यान एवं बरोड़ा गुजरात (वर्कशॉप) के दरम्यान, प्रस्तुत विषय के चयन को लेकर चर्चा करने पर मार्गदर्शक रहे |

मैं, संगीत जगत के विद्वान, कलाकारों, लेखकों, रचनाकारों एवं ग्रंथकारों के प्रति भी नतमस्तक हूँ, जिनकी रचना, साहित्य और ग्रथों से मुझे शोध-कार्य संबंधी सामग्री प्राप्त हो सकी |

मैं, दि महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बरोड़ा के फ़ैकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स, ग्रंथालय की सदस्य श्रीमती कोकिलाबेन परमार का भी आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे मेरी आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न ग्रंथों को सुलभ कराया |

मैं, प्रो. गौरांग भावसार जी का भी आभारी हूँ , जिन्होंने कार्य संपन्न करने हेतु बार-बार उत्साहित करते रहे |

मैं, मेरी बेटी उर्वी आहिरे का भी आभारी हूँ , जो प्रस्तुत विषय के टंकण में तथा कोम्पुटर तकनीकी में एवं इस शोध-प्रबंध हेतु सभी संसाधनों को इकठ्ठा करने में चट्टान की तरह मेरे साथ खड़ी रही है |

साथ ही साथ मैं अपनी धर्मपत्नी, श्रीमती प्रेमिला आहिरे को भला मैं केसे भुल सकता हूँ जिन्होंने मेरे विषम परिस्थिति में भी मेरे साथ रहकर इस कार्य को सम्पादित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है |

अंत में मेरे जन्मदाता माता पिता (पिता श्री काशीनाथ आहिरे एवं माता श्रीमती देवीका आहिरे) को प्रणाम करता हूँ , जिनसे मुझे हरदम सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती रही, तथा मेरी संगीत शिक्षा में प्रेरणा रूप उनका निस्वार्थ योगदान रहा | इनके ऋण को पुत्र रूप में मैं कभी उतार नही पाऊंगा | जिनके आशीर्वाद से आज मैं इस कार्य को करने लायक बना हूँ |

वड़ोदरा

प्रविण काशीनाथ आहिरे